Prejudice :- Social Psy (Paper V).

Q. :- पूर्वधारणा किसे कहते हैं? इसके कारणों की व्याख्या करें।
अथवा :- पूर्वधारणा के सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक कारकों की विवेचना करें।

Answer :- पूर्वधारणा या पूर्वाग्रह का अर्थ वह विश्वास है जो पूर्व-अनुभव से पड़ा होता है और जो व्यक्ति के व्यवहारों को निर्देशित करता है। कई मनोवैज्ञानिकों ने इसकी परिभाषा दी है। जिसमें Newcomb, Turner तथा Converse (1965) की परिभाषा सबसे अधिक संतोषजनक है। इनके अनुसार "Prejudice is thus an unfavarable altitude and may be thought as a predisposition to perceive. think, feel and act in ways that are against or away from rather than for or towards other persons especially as members of groups."

इस परिभाषा के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि पूर्वधारणा एक पूर्व निर्णय है जो तथ्यों पर आधारित नहीं होता है। जो सकारात्मक तथा नकारात्मक होनों होता है, जिसमें बैर-भाव पाया जाता है और जिसमें अतिसामान्यीकरण की विशेषता पायी जाती है। इन विशेषताओं के आलोक में यह भेदीकरण, प्रजातियता तथा स्थिरोकृति से भिन्न होता है। पूर्वधारणा के व्यवहार पक्ष को ही भेदीकरण कहते हैं। भेदीकरण में बैर-भाव का होना आवश्यक नहीं है। किन्तु पूर्वधारणा में यह आवश्यक है। पूर्वधारणा की अपेक्षा भेदीकरण का क्षेत्र सीमित होता है। इसी तरह प्रजातियता वस्तुतः दो प्रजातियों के बीच होती है। जबकि पूर्वधारणा दो समूहों या दो व्यक्तियों के बीच होती है। जहाँ तक स्थिरोकृति का प्रश्न है यह अधिक सीमित होती है, जबकि पूर्वधारणा अधिक विस्तृत होती है।

कारण (Causes) :- पूर्वधारणा के कारणों को निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है।

(क) सामाजिक कारक :→ पूर्वधारणा के विकास पर कई तरह के सामाजिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। जिनमें निम्नलिखित अधिक महत्वपूर्ण है।

(1) प्राथमिक समाजीकरण :- पूर्वधारणा के विकास पर प्राथमिक समाजीकरण का निश्चित प्रभाव पड़ता है। बच्चे अपने परिवार से नाना प्रकार के मूल्यों, मापदण्डों, रीति-

रिवाजों आदि को सीख लेते हैं। भिन्न-भिन्न समूहों के मापदण्डो, मूल्यों आदि में भिन्नता होने के कारण बच्चे एक-दूसरे के प्रति वैर-भाव सीख लेते हैं। हिन्दू परिवार में बच्चे ऐसे मूल्यों को सीख लेते हैं कि वे मुसलमानों के प्रति प्रतिकूल मनोवृत्ति रखने लगते हैं और उन्हें म्लेच्छ समझने लगते हैं। मुस्लिम परिवार में बच्चे कुछ ऐसे मूल्यों को सीख लेते हैं कि वे हिन्दुओं के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति विकसित कर लेते हैं और उन्हें काफिर समझने लगते हैं। इसी तरह ब्राह्मणों, हरिजनों आदि परिवारों में प्रजातिय पूर्वधारणा तथा जातिगत पूर्वधारणा का निर्माण हो जाता है। Hartley (1946), Sinha (1980) आदि के अध्ययनों से यह विचार प्रमाणित होता है।

(2) द्वितीयक समाजीकरण :— पूर्वधारणा अथवा पूर्वाग्रह के विकास पर द्वितीयक समाजीकरण का भी निश्चित प्रभाव पड़ता है। परिवार से बाहर पड़ोसियों, शिक्षकों तथा खेल-कूद के साथियों का प्रभाव बच्चों के समाजीकरण पर पड़ता है जिससे वे भिन्न-भिन्न तरह के पूर्वाग्रह को सीख लेते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि संस्कृत पाठशालाओं तथा मदरसों में शिक्षा पाने वाले बच्चों में साम्प्रदायिक पूर्वधारणा अधिक पायी जाती है। Anant (1974) तथा Sinha (1980) के अध्ययन से पता चलता है कि पूर्वधारणा के विकास पर शिक्षकों के चरित्र तथा शिक्षा के स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(3) धार्मिक संबद्धता (Religious affiliation) :→ भिन्न-भिन्न प्रकार के पूर्वधारणाओं के विकास पर धार्मिक संबद्धता का प्रभाव पड़ता है। भारत में साम्प्रदायिक पूर्वधारणा, जातिगत पूर्वधारणा, प्रजातिय तथा अन्ध-विश्वासों का सार्थक प्रभाव देखा जा सकता है। इस संबंध में Mellon (1940), Sinha (1980) आदि का अध्ययन उल्लेखनीय है।

(4) सामाजिक, आर्थिक स्थिति (Social economic Status) :— पूर्वधारणा के विकास पर सामाजिक आर्थिक स्थिति का गहरा प्रभाव पड़ता है। Anderson (1988) आदि के अध्ययनों से प्रमाणित होता है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति की अपेक्षा निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के लोगों में पूर्वधारणा अधिक पायी जाती है।

(5) देहाती-शहरी क्षेत्र (Rural-Urban region) :— Sinha and Sinha (1960) तथा Hasan and Sarkar (1975) के अध्ययन से पता चलता है कि देहाती-शहरी क्षेत्र प्रभाव भी पूर्वधारणा पर पड़ता है। शहरी लोगों की अपेक्षा देहाती लोगों में पूर्वधारणा अधिक पायी जाती है। लेकिन कुछ दूसरे अध्ययनों से इस बात का प्रमाण नहीं मिलता है। अतः देहाती तथा शहरी लोगों की पूर्वधारणा के बीच कोई निश्चित अन्तर नहीं पाया जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि देहात तथा शहर के बीच की दूरी बहुत अंशों में

(6) यौन भिन्नता (Sex difference) :— Hasan and Sarkar (1975) के अनुसार यौन-भिन्नता भी पूर्वधारणा का एक कारण है। उनके अनुसार पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में पूर्वधारणायें अधिक पायी जाती है। Singh and Singh (1960) के अनुसार लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में अधिक पूर्वधारणा पायी जाती है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि स्त्रियों में शिक्षा कम होती है और वे अधिक रूढ़ीवादी होती है।

(7) अलगाव की घटनायें (Segregation Phenomena) :- अलगाव की घटनाओं से पूर्वधारणाओं के विकास में मदद मिलती है। भारत में आरक्षण की व्यवस्था अलगाव की तरह है। इससे पूर्वधारणा के विकास में मदद मिलती है। इसी तरह हिन्दू विश्वविद्यालय, मुस्लिम विश्वविद्यालय आदि अलगाव की घटनायें हैं, जिससे पूर्वधारणा के विकास में सहायता मिलती है।

(8) जनसमूह माध्यम (Mass media) :— भिन्न-भिन्न प्रकार के जन माध्यमों से पूर्वधारणा के विकास में सहायता मिलती है। पुस्तकों, पत्रिकाओं, रेडियो, सिनेमा, दूरदर्शन आदि द्वारा प्राप्त सूचनाओं, कहानियों, नाटकों आदि के कारण पूर्वधारणा बढ़ती है और सुरक्षित रहती है। Krech आदि (1982) ने भी इस विचार का समर्थन किया है और कहा है कि भिन्न-भिन्न जन माध्यमों से पूर्वधारणा का विकास होता है।

(9) प्रचार (Propaganda) :- पूर्वधारणा के विकास में प्रचार का निश्चित हाथ होता है। राजनेता भिन्न-भिन्न तरह से प्रचार करके पूर्वधारणा को बढ़ाते है, ताकि उनका अपना उल्लू सीधा हो सके। मौखिक भाषण के रूप में किया गया प्रचार सबसे अधिक प्रभावशाली होता है। Krech and Crutchfield (1948) के अध्ययन से यह विचार प्रमाणित होता है। भारत में जातिगत पूर्वधारणा (Caste Prejudice), जातिय पूर्वधारणा (Racial Prejudice) तथा साम्प्रदायिक पूर्वधारणा (Communal Prejudice) के विकास में प्रचार का महत्वपूर्ण स्थान है।

(10) ऐतिहासिक घटनायें (Historical events) :— पूर्वधारणाओं के विकास में ऐतिहासिक घटनाओं का हाथ होता है। मुस्लिम कालीन भारत में जो घटनायें घटी उनसे साम्प्रदायिक पूर्वधारणा के विकास में आज भी मदद मिल रही है। इसी तरह जातीय पूर्वधारणा तथा जातिगत पूर्वधारणा के विकास में भी ऐतिहासिक तथा पौराणिक घटनाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

(ख) मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological Correlation)

→ पूर्वधारणा के विकास पर निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक कारकों का प्रभाव पड़ता है।

(1) मूल प्रवृत्तियाँ (Instincts) :— Freud ने दो तरह की मूल प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है। जिन्हें जीवन मूल प्रवृत्ति ही पूर्वधारणा का आधार है। इसी मूल प्रवृत्ति के कारण लोग अपने से भिन्न व्यक्तियों से घृणा करते हैं और वैर-भाव रखते हैं, जिससे नकारात्मक मनोवृत्ति या पूर्वधारणा विकसित होती है।

(2) कुण्ठा (Frustration):— कुछ मनोवैज्ञानिक कारक का प्रभाव भी पूर्वधारणा के विकास पर पड़ता है। जब व्यक्ति को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में निराशा होती है तो इसकी अभिव्यक्ति पूर्वधारणा के रूप में होती है। व्यक्ति निराशा उत्पन्न करने वाले लोगों से घृणा करने लगता है और पूर्वधारणा रखने लगता है। भारत में साम्प्रदायिक पूर्वधारणा तथा जातिगत पूर्वधारणा के विकास में इस मनोवैज्ञानिक कारक का हाथ है।

(3) आक्रमण (Aggression):— पूर्वधारणा का एक मनोवैज्ञानिक आधार आक्रमण है। व्यक्ति अपनी आक्रमणकारी प्रवृत्ति की संतुष्टि के लिए अपने से भिन्न लोगों पर आक्रमण करने लगता है और वैर-भाव रखने लगता है। Simpson तथा Yinger (1972) के अध्ययन से इसका प्रमाण मिलता है।

(4) असुरक्षा का भाव (Feeling of Insecurity):— पूर्वधारणा के विकास में असुरक्षा के भाव से मदद मिलती है। एक समूह के लोग दूसरे समूह के लोगों के कारण असुरक्षा भाव से पीड़ित होते हैं और वैर-भाव रखने लगते हैं। भारत में हिन्दुओं तथा मुसलमानों के बीच ब्राह्मणों तथा हरिजनों के बीच, उच्च वर्गों तथा निम्न वर्गों के बीच क्रमशः साम्प्रदायिक पूर्वधारणा, जातिय पूर्वधारणा तथा वर्ग पूर्वधारणा का एक मुख्य कारण के असुरक्षा का भाव है। Harding (1969) के अध्ययन से भी यह विचार प्रमाणित होता है।

(5) व्यावहारिक लाभ (Practical advantages):— पूर्वधारणा के सुरक्षित रखने के पीछे कई तरह के व्यावहारिक लाभों का हाथ है। भारत में प्रजातिय पूर्वधारणा से ब्राह्मणों तथा उच्च जाति के हिन्दुओं में प्रबलता की आवश्यकता की संतुष्टि होती है। पूर्वधारणा के माध्यम से समाज द्वारा अस्वीकृत आवश्यकताओं की संतुष्टि का अवसर मिलता है। Sinha तथा Sinha (1980) के अध्ययन से इस विचार की पुष्टि होती है।

(6) मनोरचनाएँ (Defence Mechanism):— पूर्वधारणा के विकसित होने तथा सुरक्षित रहने का एक कारण यह है कि लोग इसे रक्षा मनोरचनाओं के रूप में व्यवहार करते हैं। दमित इच्छाओं की संतुष्टि के लिए पूर्वधारणा की पृष्ठभूमि में युक्तिकरण, प्रक्षेपण, ~~प्रति~~ प्रतिक्रिया निर्माण आदि रक्षा मनोरचनाएँ कार्यरत रहती हैं। Cambell (1946) आदि के अध्ययनों से भी इस विचार की पुष्टि होती है।

(7) व्यक्तित्व शील गुण (Personality traits):— कुछ विशेष व्यक्तित्व शील-गुण वाले लोगों में पूर्वधारणा अधिक विकसित होती है। Mukherjee (1965) के अनुसार संवेगात्मक आवेगी व्यक्तियों में पूर्वधारणा अधिक पायी जाती है। Sinha (1974) के अनुसार अन्तर्मुखी लोगों में पूर्वधारणा अधिक पायी जाती है। Hasan and Sarkar (1975) के ~~लोगों~~ अनुसार अधिक चिन्ता दृढ़ता तथा सत्ता वाले लोगों में पूर्वधारणा अधिक पायी जाती है। Zafar and Sharma (1983) तथा Hilgard आदि (1990) के अनुसार अन्तः उन्मुखी व्यक्तियों में पूर्वधारणा अधिक पायी जाती है। अतः पूर्वधारणा के उपर्युक्त कई कारण हैं।